

विचार बिन्दु

मन की प्रसन्नता से समस्त मानसिक और शारीरिक रोग दूर हो जाते हैं। –रामदास

हिंदी फिल्में सिनेमाघरों के पर्दे पर कम, ओटीटी पर अधिक

इक्कीसवीं सदी के पहले दो दशकों में हिंदी सिनेमा व्यवसाय एक बड़े बदलाव से गुज़रा है, जिसमें भव्य थिएट्रिकल रिलीज़ तथा बड़े स्तर वाली फिल्मों का पारंपरिक मॉडल ध्वस्त हो रहा है। ओटीटी प्लेटफॉर्म का नया वितरण और प्रदर्शन तंत्र सिनेमाघरों की एक सदी से अधिक की प्रभुता को चुनौती देते हुए फिल्मों के भविष्य का फैसला करने लगे हैं। कोविड–19 महामारी ने इस बदलाव की गति को तेज़ किया, पर इसकी नींव पहले ही पड़ चुकी थी, जब संचार तकनीक ने लोक मनोरंजन के नये विकल्प देकर सिनेमा से मनोरंजन का एकमात्र साधन होने का खिताब छीन लिया। फिल्म निर्माण की अर्थव्यवस्था और भारत के डिजिटल ढांचे की तेजी से बढ़ती पहुंच ने मिलकर एक नई दिशा तय की। अब, हिंदी फिल्मों की थिएटर रिलीज़ में गिरावट और उनके ओटीटी पर सीधे रिलीज़ के बढ़ते चलन से मनोरंजन जगत का चरित्र भी तेजी से बदल रहा है। फिल्मों के भविष्य का फैसला अब सिनेमाघरों का बॉक्स ऑफिस नहीं करता। चतुर व्यवसायी अपने फिल्म की लागत उसकी रिलीज़ से पहले ही ओटीटी प्लेटफ़ार्मों से निकाल लेते हैं। पहले फिल्म को आय सिर्फ टिकटों की बिक्री से होती थी। इसके अलावा फिल्म के गानों की रिकॉर्डों की बिक्री तथा रेडियो पर उनके प्रसारण से होने वाली रॉयल्टी भी निर्माता पाता था क्योंकि संगीत पर पुरा उसी का कॉपीराइट होता था। हालांकि बाद में गायक, संगीतकार और गीतकार को भी इस रॉयल्टी में हिस्सा मिलने लगा। अब तो अनेक फिल्में सिर्फ फिल्म फेस्टिवलों के लिए बनती हैं। महान निर्देशक होने की स्वीकृति फिल्म फेस्टिवल के पुरस्कारों से ही मिलती है। अब दर्शक सिर्फ बड़े सितारों पर निर्भर नहीं हैं। खासकर शहरी और युवा दर्शकों में कहानी को प्राथमिकता मिलने लगी है। थिएटर अब सिर्फ इवेंट फिल्मों के लिए भीड़ खींचते हैं, जबकि मध्यम बजट की गंभीर या प्रयोगात्मक फिल्में सिनेमाघरों में टिक नहीं पातीं। लॉकडाउन के दौरान जब लोग महीनों फुरसत में घर बैठे डिजिटल माध्यम पर कंटेंट देखते रहे तो महामारी समाप्त हो जाने के बाद उनकी थियेटर जाने की इच्छा कम हो गई दिखी। उन्हें घर पर ही फिल्में देखने के कई फायदे लगे, मसलन समय की आजादी और कम खर्च। नई तकनीक ने व्यक्ति को अपनी मन चाहे समय, अकेले या परिवार के साथ, आरामदायक माहौल में फिल्म का आनंद लेने का विकल्प दिया। थियेटर में हमेशा ही आमतौर पर व्यावसायिक फिल्मों का बोलबाला रहा है, जबकि ओटीटी पर विदेशी सीरीज़ के साथ डॉक्यूमेंट्री, इंडी तथा क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्में तथा प्रयोगात्मक कंटेंट सब कुछ उपलब्ध हो गया। उधर फिल्म निर्माताओं का झुकाव ओटीटी तरफ़ सलिए भी हुआ क्योंकि वहां बिना जोखिम के लागत की वसूली हो जाने के अवसर मिलने लगे। जहां थियेटर में फिल्म की किस्मत पहले दिन की कमाई, उसकी स्टार पावर, वर्ड ऑफ़ माउथ प्रचार, और प्रतियस्पर्धा पर निर्भर होती है वहां ओटीटी प्लेटफॉर्म फिल्म राशि में फिल्में खरीद लेते हैं जिससे एक सामान्य निर्माता बिना किसी बॉक्स ऑफ़िस जोखिम के शुरुआत में ही अपनी फिल्म के निर्माण की लागत निकाल लेता है। वहां एक और बड़े सितारों के बड़े-बड़े भुगतानों से फिल्मों का बजट बढ रहा है, वहीं थियेटरों में दर्शकों की संख्या निरंतर घट रही है। ऐसे में छोटे, कम चर्चित व नये कलाकारों को लेकर फिल्में बनाने वाले निर्माताओं के लिए ओटीटी बेहतर सौदा साबित होता है। हर प्लेटफॉर्म पर सब्सक्राइबर्स पाने के लिए एक्स्क्लूसिव फिल्में चाहता है। इस प्रतियोगिता में निर्माता का ही लाभ होता है।

नई यंत्र तकनीकी पुराने बॉक्स ऑफ़िस फ़ॉर्मूलों से मुक्ति दिलाती है। ओटीटी पर फिल्में ‘मसाला फ़ॉर्मूला’ के दबाव से बच जाती हैं। निर्माता-पटकथा लेखक आम पूरी छूट से मनोवैज्ञानिक थ्रिलर, यथार्थवादी, महिला-केंद्रित तथा डाकू कॉमेडी जैसी फिल्में बना पाते हैं, जिससे छोटे और प्रतिभाशाली अभिनेताओं, लेखकों तथा निर्देशकों को सामने आने और अपनी प्रतिभा दिखने का अवसर मिलता है। इस प्रकार ओटीटी ने बड़े सितारों के वर्चस्व को तोड़ा है। तो क्या सिनेमाघर खत्म हो जाएंगे? यह सवाल अब खूब पूछा जा रहा है। यह कहना तो ठीक नहीं है कि थियेटर खत्म हो रहे हैं, मगर उनकी संख्या जरूर सीमित हो रही है। सिंगल स्क्रीन थियेटरों की जगह सिनेमा होटलों जैसे मल्टीप्लेक्स ने ली है जिनकी टिकट दरें भी सामान्यजन को उनसे दूर रखती हैं। वहां सिनेमा प्राथमिक नहीं है। वहां खाना-पान और

यह सही है कि ओटीटी ने ऑडियो-विज़ुअल मनोरंजन को सबके लिए सुलभ बनाया है और विविध आवाज़ों को नया मंच दिया है, मगर यह भी शंका जताई जा रही है कि यह नया गुब्बारा कितने दिन चलेगा और अंततः फटने में कितना समय लेगा? क्या वह डॉटकॉम के गुब्बारे की तरह एकदम धड़ाम हो जाएगा या मनोरंजन की दुनिया में अपनी स्थाई जगह बना लेगा? इन सभी सवालों के जवाब भविष्य के गर्भ में हैं। अभी किसी का मसिया पढ़ने का समय नहीं है।

अधिकार घट रहे हैं और उनकी जगह भी ओटीटी ले रहे हैं। टीवी देखने वालों की संख्या कम हो रही है, इसलिए सैटेलाइट राइट्स की कीमत घट गई है। अब ओटीटी राइट्स फिल्मों का बड़ा वित्तीय सहारा बन गए हैं। ऐसे में फिल्मों के हाइब्रिड रिलीज़ मॉडल सामने आये हैं। पहले थियेटरिकल रिलीज़ के बाद टीवी चैनल राइट्स देने का चलन था। अब कई फिल्म निर्माता जो नया मॉडल अपनाते हैं उसमें सीमित थियेट्रिकल के साथ जल्दी ओटीटी राइट्स, फेस्टिवल प्रीमियर के साथ ओटीटी राइट्स तथा सीधे ओटीटी राइट्स के साथ मांग पर थियेटर रिलीज़ के व्यवस्था होती है। जन संचार के नये माध्यम के रूप में उछलकर सामने आये सोशल मीडिया ने अन्य सभी क्षेत्रों के साथ फिल्मों के प्रचार पर भी प्रभाव डाला है। सोशल मीडिया में हर चीज तुरंत होती है। वहां इंस्टेंट रिव्यू कल्चर चल पड़ा है। इसमें अच्छे और बुरे सभी प्रकार के समीक्षक अपना लिखा जम कर चलाते हैं। यह एक ऐसा अनियंत्रित मीडिया है जहां खराब समीक्षा तुरंत फैल जाती है और फिल्म का बॉक्स ऑफ़िस गिर जाता है। बहुतां को यह लगता है कि ओटीटी इस जोखिम को कम कर देते हैं। सभी जानते हैं कि डिजिटल मीडिया एल्गोरिथ्म का खेल है और ओटीटी का एल्गोरिथ्म खुद ही फिल्म को लाखों यूज़र्स तक पहुंचाते हुए थियेटर को पछाड़ देता है। थिएटर में दर्शकों की भौतिक उपस्थिति और समय पर फिल्म की सफलता या असफलता तय करती है।

फिल्म देखने दिखाने की यंत्र तकनीक जितन नई व्यवस्था कुछ नया अनुभव दे रही है तो कुछ पुराना अनुभव हमसे छीन भी रही है। ओटीटी को नारायंद करने वाले कहते हैं कि इससे हम फिल्में देखने का सामूहिक अनुभव खो रहे हैं? थियेटर में एक साथ फिल्म देखना, तालियां बजाना, सीटी बजाना जैसा अनुभव ओटीटी पर संभव नहीं है। दूसरी तरफ थियेटर की विविधता समाप्त हो रही है। सिनेमा स्क्रीन पर ए–ग्रेड, बी–ग्रेड, और सी–ग्रेड तीनों श्रेणियों को फिल्में प्रदर्शन के लिए आती थीं। विशेषज्ञ मानते हैं कि जैसे–जैसे छोटी फिल्में ओटीटी पर जा रही हैं, थिएटर केवल बड़े एक्शन और स्टार–फिल्मों तक सीमित होते जा रहे हैं। नये अभिनेताओं के संघर्ष की बात करें तो यह भी सामने आता है कि नये कलाकारों को ओटीटी पर पहचान तो मिल जाती है, पर थियेटर वाला बड़ा सितारा दर्जा पाना अब और मुश्किल बन गया है। ओटीटी पर किसी कलाकार की लोकप्रियता भी स्थाई या लंबी चलने वाली नहीं लगती। ऐसे में मनोरंजन बाज़ार की आर्थिकी पर निगाह रखने वाले विश्लेषक नयी व्यवस्था में हिंदी सिनेमा का दोहरा भविष्य देखते हैं। वे मानते हैं कि फिल्मों की थियेटर रिलीज़ में गिरावट और ओटीटी–एक्स्क्लूसिव फिल्मों का उभार एक अस्थायी ट्रेंड नहीं है, बल्कि मनोरंजन उद्योग का स्थायी पुनर्गठन है। उनका मानना है कि आने वाले समय में हिंदी सिनेमा दो रास्तों पर चलेगा। एक सिनेमा थियेटरों के लिये होगा, जो बड़े स्टार, भव्य फिल्मों, हाई–विजुअल ड्रामा और फ्रेंचाइज़ी वाला होगा। और दूसरा ओटीटी के लिए होगा जिसमें यथार्थवादी कहानियां कही जाएंगी, जहां माध्यम या कम–बजट की फिल्में होंगी, प्रयोगात्मक कथानक और नये कलाकारों के साथ विविध और निश्चित दमन समूहों को रिक्षाने वाला कंटेंट होगा। यह सही है कि ओटीटी ने ऑडियो–विजुअल मनोरंजन को सबके लिए सुलभ बनाया है और विविध आवाज़ों को नया मंच दिया है, मगर यह भी शंका जताई जा रही है कि यह नया गुब्बारा कितने दिन चलेगा और अंततः फटने में कितना समय लेगा? क्या वह डॉटकॉम के गुब्बारे की तरह एकदम धड़ाम हो जाएगा या मनोरंजन की दुनिया में अपनी स्थाई जगह बना लेगा? इन सभी सवालों के जवाब भविष्य के गर्भ में हैं। अभी किसी का मसिया पढ़ने का समय नहीं है। मनोरंज की दुनिया तमशे की दुनिया होती है। थियेटर का प्रयास सही रहेगा कि वे फिल्मों को उत्सव और भव्यता के साथ प्रदर्शित करते रहें। उनके यहां फिल्मों का प्रदर्शन एक इवेंट हो जिससे उनकी हैसियत और उनका बॉक्स ऑफ़िस बढा रहे। सिनेमाघरों में आई ओटीटी के लिए फिल्मों के वरुक्ष की चुनौती जरूर रहेगी। इन दोनों माध्यमों के बीच संतुलन को बनाए रखना आसान नहीं है क्योंकि मनोरंजन का बाज़ार अपने मुनाफे के अनुरूप नई–नई तकनीकों का विकास करता रहता है।

—अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोडा (वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

कौन था मैकाले और क्या किया उसने जिसे 200 साल बाद 2०35 तक मिटाकर, शून्य कर, ऐतिहासिक औपनिवेशिक अवशेष समाप्त करने हैं



माहवीर सिंह

1834 में एक मैकाले (थॉमस बैबिंगटन मैकाले) नाम का अंग्रेज भारत आया था, वह तत्सम्य केब्रिटिश भारत में, ईस्ट इंडिया कंपनी के सर्वोच्च अंग्रेज अधिकारी गवर्नर जनरल की कौंसिल में कानूनी व शैक्षणिक मुद्दों पर सलाहकार, सदस्य की हैसियत से आया था।

वर्तमान में देश के कई ख्यात नाम राजनेताओं, संगठनों ने यह आह्वान किया है कि 2035 में मैकाले के भारत में आने की घटना को 200 वर्ष हो जाएंगे। उसने हमारी सांस्कृतिक विरासत, शैक्षणिक कानूनी पद्धतियों को, इतिहास को जो नुकसान पहुंचाया, विकृत किया उसे समाप्त करना है।

मैकाले ने भारत में, मुख्य रूप से,

- वर्तमान में देश के कई ख्यात नाम राजनेताओं, संगठनों ने यह आह्वान किया है कि 2035 में मैकाले के भारत में आने की घटना को 200 वर्ष हो जाएंगे। उसने हमारी सांस्कृतिक विरासत, शैक्षणिक कानूनी पद्धतियों को, इतिहास को जो नुकसान पहुंचाया, विकृत किया उसे समाप्त करना है। मैकाले ने भारत में, मुख्य रूप से, दो काम किए - एक था न्याय व्यवस्था के सुव्यवस्थीतीकरण के लिए इंडियन पीनल कोड (दंड संहिता), सी आर पी सी (क्रिमिनल प्रोसीजर कोड), सिविल प्रोसीजर कोड के मसौदे (ड्राफ्ट) तैयार किए जो कालांतर में कानून बने।**

दो काम किए --एक था न्याय व्यवस्था के सुव्यवस्थीतीकरण के लिए इंडियन पीनल कोड (दंड संहिता), सी आर पी सी (क्रिमिनल प्रोसीजर कोड), सिविल प्रोसीजर कोड के मसौदे (ड्राफ्ट) तैयार किए जो कालांतर में कानून बने। इन कानूनों से पहले अपराधिक विवादों के निर्णय, अलग-अलग राज्यों - क्षेत्रों में धर्म शास्त्रों के आधार पर होते थे। दंड कई शास्त्रों के अनुसार जाती आधारित भी होते थे। अंग्रेजों द्वारा बनाए कानूनों के बाद ब्रिटिश भारत के क्षेत्रों में एकरूपता व स्पष्टता आ गई। इस से किसी को क्या नुकसान हुआ?

हां, कुछ धर्म शास्त्रों के अनुसार न्याय करने वाले न्याय अधिकारियों के अधिकार जरूर कम हुए। भारत के अधिसंख्य 80 प्रतिशत ग्रामीण, मजदुर, किसान, रेहड़ी-ढेले वालों, छोटे दुकानदारों, दलित, पिछड़े, आदिवासियों का तो अंग्रेज शासन में बने इस प्रकार के कानूनों से कोई अहित हुआ नहीं।

स्वतंत्रता के बाद भारत की संसद ने इन कानूनों में, आवश्यकता के अनुरूप, समय समय पर संशोधन किए हैं। वर्तमान सरकार ने तो इन तीनों कानूनों की जाह नए नामों से, कुछ अपराधों की धाराओं की संख्या में परिवर्तन करके और कुछ ठोस परिवर्तन करके, नए कानून बना दिए। वैसे इसमें कुल मिला कर यह सारी कवायद पुरानी शराब नई बोटल वाली सी बात है। हमारी संसद ने इस कवायद से पहले भी अनेक नए अपराधिक कानून बनाए हैं,कई कानूनों में संशोधन किए हैं, कई अपरासंगिक हुए कानूनों के निरस्त किया है। इस प्रकार के कानूनों की इस आधार पर तो आलोचना का कोई बिंदु नहीं बनता।

अब आते दूसरे बिंदु पर। शिक्षा के क्षेत्र में उस के द्वारा गवर्नर जनरल को दिए सुझाव व उनका क्रियाव्ययन करना। उन पर आरोप है कि उन्होंने शिक्षा के लिए पाश्चात्य दृष्टिकोण को बड़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आलोचक कहते हैं मैकाले ने तत्सम्य की भारतीय शास्त्र पद्धतियों, भारतीय संस्कृति और भारतीय शास्त्रों में वर्णित ज्ञान भंडार को लुप्त करने कराने की शुरुआत की। इतना ही नहीं उसने शिक्षा का माध्यम भी

अंग्रेजी भाषा रखने की अनुशंसा की जिसे माना गया।

आगे विचार करने से पहले यह जानना जरूरी है कि अंग्रेजों के आने से पहले, प्राचीन काल से मैकाले से पूर्व भारत में शिक्षा व्यवस्था क्या थी? एक काल मुस्लिमों के सत्ता में आने से पहले का है और दूसरा इस के बाद का। प्राचीन भारत में प्रारंभिक, प्राथमिक शिक्षा के लिए विभिन्न छोटे-बड़े राज्यों में राज्यों द्वारा क्या कोई व्यवस्था थी, इसका कोई पुख्ता प्रमाण नहीं मिलता। इस स्तर की शिक्षा की व्यवस्था का जिम्मा ग्राम, शहर स्तर पर मुख्यतः पढ़ लिखे ब्राह्मणों या कुछ दूसरे पढ़े-लिखे लोगों का था। यह लोग या तो अपने निवास पर या समुदाय द्वारा उपलब्ध स्थान या या मंदिरों, मठों में बालकों को पढ़ाते थे। इनके भरण पोषण का जिम्मा या तो ग्राम, मोहल्ला, टोला निवासी करते थे या कोई सेट साहूकार करते थे या कहीं-कहीं बड़े जमींदार, जागीरदार या राज्य ऐसे लोगों को निःशुल्क कृषि भूमि देते थे जो सामान्यत माफ़ी भूमि कहलाती थी। इस प्रकार दी गई भूमियों को कहीं-कहीं अग्रहार भी कहा जाता था।

उपरोक्त के अतिरिक्त कुछ गुरुकुल भी होते थे। उन्हें वर्तमान की स्कूलों की तरह स्कूल समझा जा सकता है। इनमें अधिकतर एक गुरुजी ही अध्यापन का दायित्व निभाते थे। युद्ध

उज्जैन, विक्रमशिला शिक्षा के बड़े केंद्र थे। इन विश्व विद्यालयों में चीन आदि बाहर के देशों से लोग पढ़ने, सीखने, पढ़ाने आते थे। यह भी सही है कि 7वीं ईस्वी सदी से पहले के कुछ महान गणितज्ञ, खगोल व ज्योतिष विज्ञान में परागत प्रसिद्ध विभूतियां भारत में हुई हैं जैसे—आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, वराह मिहिर आदि। शून्य व दशमलव प्रणाली की अवधारणा, बीज गणित, त्रिकोणमिति, ग्रहों की गति गणना आदि क्षेत्रों में इन विभूतियों का बड़ा योगदान है।

अब यहां एक प्रश्न उठाया जाना जरूरी है कि 7वीं सदी के बाद के काल खंड की चर्चा करें तो उस दौरान शेष विश्व के कई देशों में कई नई क्रांतिकारी खोजें हुए, विचार उभरे तो भारत में जो शिक्षा का स्तर था उसने आम आदमी को क्या दिया? विश्व में इस काल खंड में कागज आया,प्रिंटिंग प्रेस आई, बारूद आई, साहसी लोगों में जान जोखिम में डाल के समुद्री यात्राएं कर अमरीका जैसा नया संसार खोजा, सस्ते व्यापार के लिए भारत जैसे देशों के लिए नए समुद्री व्यापारिक मार्ग ढूंढे।जब पश्चिम, मध्य एशिया, चीन आदि देशों में यह सब हो रहा था, भारत में क्या नई खोजें हुई?

मैकाले की आलोचना के प्रमुख बिंदु -----
मैकाले की योजना थी कि सीमित संसाधनों के चलते पहले उच्च वर्ग को अंग्रेजी शिक्षा दी जाए। यह लोग पाश्चात्य ज्ञान आम जनता तक पहुंचा सके। ब्रिटिश शासन के लिए जनता और शासन के बीच संवाद आसान बना सकें यानि कर्कश तैयार हो सकें। आलोचकों द्वारा एक प्रमुख वाक्य यह कहा जाता है कि उनकी चाल थी कि भारतीयों में से एक ऐसा वर्ग तैयार करें जो रक्त और रंग से तो भारतीयों हो लेकिन स्वाद, विचार और बौद्धिकता से अंग्रेजों जैसा हो।

वैसे जो भी बाहर से भिन्न भाषी शासक आए उन्हें ऐसे व्यक्तियों की सदैव आवश्यकता होती है जो उनकी बात आवाग को और आमग की बात शासकों तक पहुंचा सके। केवल इसके लिए मैकाले की आलोचना का कोई ठोस कारण नहीं बनता। आज भी भिन्न-भिन्न देशों में लोग भिन्न-भिन्न भाषाएं पढ़ते-पढ़ाते हैं। भिन्न देशों के मध्य राजकाज व्यापारिक रिश्तों, विचारों के आदान-प्रदान के लिए दुभाषिए रखे जाते हैं।

मैकाले के बाद 1854 में वुड्स डिस्पैच (जिसे आधुनिक भारतीय शिक्षा का चांदर कहा जाता है) में उनकी नीतियों को स्पष्ट रूप से लागू किया गया। इसमें यह सिफारिश हुई कि जन सामान्य तक शिक्षा पहुंचाना तत्सम्य की अंग्रेज सरकार के हित में है और सरकार की प्राथमिकता होगी। प्राथमिक शिक्षा क्षेत्रीय भाषाओं, माध्यमिक शिक्षा अंग्रेजी व क्षेत्रीय भाषाओं में होगी। महिला शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, शिक्षकों के प्रशिक्षण को, निजी विद्यालयों को प्रोत्साहन की बात की गई। कंपनी स्कूलों में शिक्षा धर्म निरपेक्ष होगी। इसके बाद ही बंगाल, मद्रास, बॉम्बे में एक एक विश्व विद्यालय खोले गए।

मैकाले व वुड्स सिफारिशों के बाद मुख्यतः हंटर आयोग ने क्या सिफारिशें की जो शिक्षा के संबंध में लागू हुई??

मैकाले व वुड्स की सिफारिशों के बाद भारत के अंग्रेज गवर्नर रीपन ने 1८८2 में सर विलियम हंटर की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया। आयोग का मुख्य कार्य मैकाले व वुड्स डिस्पैच की सिफारिशों के बाद शिक्षा क्षेत्र की व मुख्य रूप से प्राथमिक शिक्षा की स्थिति की समीक्षा करना था।आयोग को प्राथमिक शिक्षा के विस्तर के सुझाव देने थे। मिशनरियों के रोल पर भी सुझाव देने के लिए भी कहा गया था।

जिसने प्राथमिक शिक्षा के विस्तार, व्यावसायीकरण और स्थानीय निकायों की भागीदारी की सिफारिश की थी।
आयोग की सिफारिशें :--
प्राथमिक शिक्षा का विस्तार करने, इसे अनिवार्य और निःशुल्क बनाने की सिफारिश, की गई। ग्रामीण क्षेत्रों में

स्कूलों की संख्या बढ़ाने का सुझाव शिक्षा क्षेत्र में नगर पालिकाओं और जिला बोर्डों की भूमिका बढ़ाने की सिफारिश की गई। शिक्षा को व्यावहारिक बनाने के लिए भौतिकी, कृषि जैसे विषयों को पढ़ाने की सिफारिश की गई। महिलाओं और निचले वर्गों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना और उनके लिए अलग स्कूल खोलने की बात कही। मिशनरियों के बजाय निजी भारतीय संस्थाओं को उच्च शिक्षा की जिम्मेदारी सौंपने पर जोर दिया।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि मैकाले से लेकर हंटर तक जो सिफारिशें शिक्षा के क्षेत्र में पुरा हुईं उनसे तर्क आधारित शिक्षा का विस्तार व सीमावर्धन करण हुआ। यूरोप में भी 1२,13 वीं सदी से पूर्व, शिक्षा सीमित समंत, धनिक वर्ग के लोगों तक सीमित थी। धार्मिक ग्रंथों पर आधारित शिक्षा का ही बोलबाला था। यूरोपियन पुनर्जागरण से ही, वहां तर्क, विज्ञान आधारित शिक्षा का विस्तार हुआ, साहित्य – राजनीति शास्त्र समाज विज्ञान – तथ्य और तर्क आधारित इतिहास लेखन आदि विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कोटि का लेखन हुआ। भारत में भी उपनिवेशन काल में ही उत्कृष्ट कोटि के गोदान जैसे कई उपन्यास, कहानियां का लेखन हुआ। कई ख्यातनाम इतिहास कार हुए।

एक अन्य आरोप लगता है कि मैकाले की शिक्षा से निकले इतिहासकारों ने हमारे इतिहास को तोड़मरोड़ कर तथ्यों के विपरीत ब्रिटिशर्स व उसके बाद कांग्रेस की इच्छानुसार लिखा गया:--

सही है, इस काल में, मात्र राजाओं, सामंतों की अतिरिक्त प्रशंसाओं के इतिहास लेखन से हटकर तथ्यों का तर्क के आधार पर गहन परीक्षण कर इतिहास लेखन विकसित हुआ। इसके लेकर कुछ लोग हमेशा विचलित, असहज दिखने लग जाते हैं। ऐसे लोग, ऐसे संगठन मात्र अपनी इच्छाओं के अनुसार, राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के

- मैकाले के बाद 1854 में वुड्स डिस्पैच में उनकी नीतियों को स्पष्ट रूप से लागू किया गया। इसमें यह सिफारिश हुई कि जन सामान्य तक शिक्षा पहुंचना तत्सम्य की अंग्रेज सरकार के हित में है और सरकार की प्राथमिकता होगी। प्राथमिक शिक्षा क्षेत्रीय भाषाओं, माध्यमिक शिक्षा अंग्रेजी व क्षेत्रीय भाषाओं में होगी। महिला शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, शिक्षकों के प्रशिक्षण की, निजी विद्यालयों को प्रोत्साहन की बात की गई**

लिए इतिहास लेखन चाहते हैं।

क्या हम इन तथ्यों से इनकार कर सकते हैं कि भारत में पिछले लगभग 3 हजार साल से लगातार भिन्न जातियों के लोग आकर बसते रहे हैं।विभिन्न विदेशी आक्रमणकारी भारत में आए। कुछ लूटपाट कर के लौट गए, कुछ यहीं के होकर रह गए। भारत के इतिहास का तथ्यों पर आधारित सत्य है कि कई विदेशी आक्रमणकारियों को यहीं के राजाओं, सामंतों ने आमंत्रण दिया था, सहायता की थी। लगता है कुछ लोग इस बात से असहज होते हैं। क्या मोहम्मद गौरी को आमंत्रण नहीं दिया गया? क्या खनवा के युद्ध में महाराणा प्रताप ने अदम्य वीरता का परिचय दिया किंतु हारे? ओर बहुत सी बातों के साथ-साथ, ऐसे लोग हल्दी घाटी के युद्ध का भी पुनर्लेखन चाहते हैं।उनकी इच्छानुसार लिखा जाए कि इस युद्ध में महाराणा प्रताप जीवाई हुए। महाराणा प्रताप निश्चित रूप से अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ रहे थे।लड़ाई एक द्वारा साम्राज्य विस्तार व दूसरे द्वारा अपने राज्य की रक्षा की थी। बहुत से हिंदू राजा अकबर के साथ थे। वीर शिवाजी की वीरता, युद्ध कला की भूरी-भूरी प्रशंसा इतिहासकारों ने की है। यह मात्र उदाहरण हैं।

ले-देकर ऐसे लोगों, संगठनों का इतिहास लेखन में स्थानों, पुराणों, इमारतों के नाम बदलने, पुरानी ऐतिहासिक घरोहों के साथ छेड़छाड़ करने, पुस्तकों में से उनके लिए असहज अंशों को हटा देना, अस्पष्ट –अप्रमाणित तथ्यों को जोड़े देने आदि से अधिक कुछ नहीं होता।

भारतीय संस्कृति के अपमान की ध्योरी: आलोचकों के अनुसार शिक्षा क्षेत्र में नगर पालिकाओं और जिला बोर्डों की भूमिका बढ़ाने की सिफारिश की गई। शिक्षा को व्यावहारिक बनाने के लिए भौतिकी, कृषि जैसे विषयों को पढ़ाने की सिफारिश की गई। महिलाओं और निचले वर्गों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना और उनके लिए अलग स्कूल खोलने की बात कही। मिशनरियों के बजाय निजी भारतीय संस्थाओं को उच्च शिक्षा की जिम्मेदारी सौंपने पर जोर दिया।

मैकाले ने भारतीय साहित्य और संस्कृति को तुच्छ, पूर्णतः बेकार बताया, जिससे भारतीय भाषाओं और पारंपरिक ज्ञान को उपेक्षा हुई। उनके हवाले कहा जाता है— भारतीय साहित्य, किसी अच्छी यूरोपियन लाइब्रेरी की एक अलमारी में रखे अंग्रेजी साहित्य जितना मूल्य नहीं रखता।

कुछ लोग तथा संगठन समय-समय पर मैकाले को आगे रख कर यह आरोप लगाते हैं कि उसके द्वारा शुरू शिक्षा के कारण हमारा इतिहास, संस्कृति प्रदूषित हुए। भारत के मूल्यों को भूलकर सदैव पश्चिमी नजरिए से भारत की समस्याओं का समाधान खोजते हैं। इतिहास के बारे में उपर चर्चा की। आइए अब देखें कि ब्रिटिशर्स ने जो शिक्षा का प्रसार किया, धर्मान्निपेक्ष करण किया उस से हमारी संस्कृति कैसे नष्ट हुई?

क्या भारतीयों ने अपने तीज त्यौहार मानने – मनाने छोड़ दिए, विभिन्न प्रकार की देव पूजा, वृक्ष पूजा, जल स्त्रोतों, नदियों का पूजन बंद कर दिया? क्या तीर्थयात्र बंद कर दिया, क्या मंदिरों में जाना छोड़ दिया, क्या विभिन्न अवसरों पर घरों – मंदिरों में होने वाले पूजा-पाठ बंद हो गए, क्या उतर भारतीयों ने दक्षिण के और दक्षिण के लोगों ने दक्षिण, उतर में स्थित पवित्र स्थलों पर आना-जाना छोड़ दिया?? क्या अंग्रेजों ने यहां के धार्मिक, दार्शनिक प्रश्नों, अन्य ग्रंथों को नष्ट, प्रतिबंधित किया? फिर अंग्रेजों द्वारा जो शिक्षा देनी प्रारंभ की उस से यहां के साहित्य, संस्कृति की अवर्नात कैसे हुई? उल्टा, उस शिक्षा के कारण तो हिन्दू धर्म में सुधारों के आंदोलन प्रारंभ हुए जिनके बहुत सुखद परिणाम निकले। बाद विवाहों को बंद करने की मांग उठी, विधवा विवाह के स्वीकृति की मांग उठी, सती प्रथा को समाप्त करने का कानून बना। धार्मिक पण्डितों के विरुद्ध आर्य समाज, ब्रह्म समाज जैसे व अन्य कई संगठन बने और इन पाखंडों का विरोध करने आगे आए। ईश्वर चंद्र



पंडित अनिल शर्मा

मंगल-धनु, बुध-वृश्चिक, गुरु-मिथुन, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज अमृतसिद्धि योग सायं 5:11 से सूर्योदय तक है। सर्वाथसिद्धि योग सायं 5:11 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 2:33 से आरम्भ होगी। आज प्रदोष व्रत, श्री चन्द्र प्रभु जयन्ती है।

श्रेष्ठ जोषाईद्वारा: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:4८ तक, शुभ 11:05 से दिन 12:23 तक, चर 2:57 से 4:15 तक, लाभ 4:15 से सूर्यास्त तक।
राहूकाल: 1२:०० से 1:३० तक। सूर्योदय 7:1३, सूर्यास्त 5:३2 तक

राशिफल

बुधवार 17 दिसम्बर, 2025

पौष मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 20८२, विशाखा नक्षत्र सायं 5:11 तक, सुकामा योग दिन २:17 तक, गर करण, रात्रि १:15 तक, चन्द्रमा आश प्रातः 1०:26 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

रश्मि स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-तुला, मंगल-धनु, बुध-वृश्चिक, गुरु-मिथुन, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज अमृतसिद्धि योग सायं 5:11 से सूर्योदय तक है। सर्वाथसिद्धि योग सायं 5:11 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 2:33 से आरम्भ होगी। आज प्रदोष व्रत, श्री चन्द्र प्रभु जयन्ती है।
श्रेष्ठ जोषाईद्वारा: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:४८ तक, शुभ 1१:05 से दिन 1२:२३ तक, चर २:57 से 4:15 तक, लाभ 4:15 से सूर्यास्त तक।
राहूकाल: 1२:०० से 1:३० तक। सूर्योदय 7:1३, सूर्यास्त 5:32 तक

मे़ष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह से अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक कार्यों से अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

वृष
सर्वाकार में स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागीदारी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनावश्यक आर्थिक समस्या हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

कर्क
परिजन के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों में दुविधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। घर-परिवार के कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

सिंह
घर-परिवार में अतिथियों के आमनन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सौच-विचार हो सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियाव्ययन हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कन्या
परिवार में अतिथियों के आमनन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सौच-विचार हो सकता है।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्य की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।